बहना और भाभी को चोदा.

मैं हुं यश. मैं २६ साल का हुं और डाक्टर हुं. ये कहानी है मेरी पहली चुदाइ की जब मैं ने मेरी भाभी मंजुला और छोटी बहन नेहा को अेक साथ चोद लीया था. उस वक्त मैं उन्नीस साल का था और नया नया मेडीकल कालेज में भरती हुवा था.

आगे कुछ लीखुं इस से पहले परिचय करवा दुं. मेरे परिवार में मैं हुं, माताजी है, पिताजी है और मुझ से दो साल छोटी बहना है नेहा. उमर का फासला कम होने से बचपन से हम भाइ बहन काफी नीकट रहे हैं, जीगरी दोस्त की तरह. अेक दुजे से खुल कर बात कर सकते हैं, सलाह मशवरा लेते हैं और नीजी बातें भी बताते हैं. उस ने मेरा लोडा ठीक से देखा है नरम और तना हुवा. मैं ने उस की भोस देखी है भगोष्ठ चौडे कर के, इन के बावजुद हमारे बीच चुदाइ का खयाल तक आया नहीं था. हां, मुठ मार ने में कइ बार उस ने मेरी मदद की है, मैं ने भी उस की मदद की है हाथ से पिकी मसल के.

पिताजी शहर की अेक स्कूल के प्रीन्सीपाल थे. हर साल दो वेकेशन मीलते थे जब हम हमारे गांव जाते थे.हमारे कइ चाचा वाचीयां थे. इन में अेक था जसवंत जो मेरा कजीन था. वो मुझ से दो साल बडा था फीर भी मेरा पक्का दोस्त था. अेक साल पहले उसकी शादी हुइ थी मंजुला भाभी से. भाभी मेरी उम्र की थी.

इस बार भी मइ के वेकेशन में हम गांव गये हुअे थे. कडी धुप पड रही थी. दोपहर का खाना खा कर सब सोये हुये थे. अेक मैं था जीसे नींद नहीं आ रही थी. नेहा का भी यही हाल था. वो बोली : चलो भैया मंजुला भाभी के घर चलें बडे भैया और भाभी के साथ ताश खेलेंगे.

हम जसवंत के घर गये. मंजुला कुछ काम कर रही थी. जसवंत दीखाइ दे रहा नहीं था. मैं ने पुछा : भैया नहीं है ? सो गये हैं क्या ?
बनावट का गुस्सा दीखा कर भाभी बोली : क्युं ? मैं नहीं हुं क्या ? भैया बीना नहीं चलेगा ?

नेहा : क्युं ना चलेगा ? हम ने सोचा चलो भाभी के घर जायें और ताश खेलें.
मंजुला उदास हो गइ और बोली : वो तो रात होने तक नहीं आयेंगे.
मैं : कहां भेज दीये इतनी धुप में ?
मंजुला : मैं ने नहीं भेजे, अपने आप गये हैं.
नेहा : कहां गये हैं ?
मंजुला : ओर कहां ? वो भले उन के खेत भले.
नेहा : क्या बात है भाभी ? उदास क्युं हो ? झगडा हो गया है क्या ?
मंजुला : जाने भी दीजीये. ये तो हर रोज की बात है. आप जान कर क्या करेंगे ?
नेहा ने उस के कंधे पर हाथ रख पूछा : दाल में जरुर कुछ काला है ? बता भाभी, कम से कम दील हलका हो जायेगा. हम से कुछ हो सके तो वो भी करेंगे. बोल, क्या बात है ? मारपीट करते हैं ?
मैं ने कहा : हां भाभी, क्या बात है ?

मैं और नेहा चारपायी पर बैठे थे. मंजुला हमारे बीच फर्श पर बैठी थी. नेहा की गोद में सिर रख कर वो रो पडी. मैं ने उस की पीठ सहला कर उसे सान्त्वन दीया. मैं ने नेहा से पानी लाने कहा.

नेहा उठ कर पानी लेने गइ. मैं ने मंजु का चहेरा हाथों में भर लीया. इतनी मासुम लगती थी वो. नेहा के आने से पहले मैं ने उसे कान में पूछ लीया : भाभी, रोज रात चोदता तो है ना ?
मंजु ने शरमा कर आंखें बंद कर दी. बोली : ना, आज बीस दीन हुअे.
नेहा ने सुन लीया. पूछने लगी : कीस के बीस दीन हुअे ?
मैं : तु नहीं समझेगी, छोटी हो. बाद में बताउंगा.
मंजु को पानी दे कर नेहा ने अपने स्तनों नीचे हाथ रख कर उपर उठाये और बोली : ये देख भैया, मैं छोटी दीखती हुं ? भाभी ?
नेहा के होठों पर हसी आ गइ. उस ने कहा : नहीं, ननद जी, तुमारे तो मेरे से बडे हैं. मैं कह रही थी की बीस दीन से तुमारे बडे भैया मुझ से बोले नहीं है.
नेहा के स्तन वाकइ बडे थे. वो सत्रह साल की तो थी ही. मैं ने सोचा खुला बोलने में कोइ हर्ज नहीं है. मैं ने कहा : भाभी का मतलब है कि बीस दीन से भैया ने उसे चोदा नहीं है.
नेहा अवाक रह गइ फिर बोली : भैया.....
मैं : भाभी, तु शुरु से बता क्या हुवा.

हुवा अैसा था की मंजुला के पिताजी की सुरत शहर में छोटी सी दुकान थी. सामने रतीलाल नाम के आदमीका पान का गल्ला था. मंजुला सुरत में बडी हुइ थी. जसवंत से शादी के बाद कीसी ने जसवंत को भरमाया की कंवारी मंजुला के साथ रतीलाल का चक्कर चल रहा था. बस तब से जसवंत रुठ गया था.

मैं : क्या तु ने सचमुच चक्कर चलाया था ?
मंजु : नहीं तो. रतीलाल लेकिन लाइनें मारता रहा था. मैं ने उस की अेक का जवाब नहीं दीया.
मैं : रतीलाल या फतीलाल, तुझे कीसी ने चोदा था ?
नेहा : हाय हाय, भैया, तु कैसा कैसा पूछता है ?
मंजु थोडी शरमायी फिर बोली : कीसी ने छुआ तक न था. तुमारे भैया ने ही पहली बार चो...वो कीया सुहाग रात को. मुझे दर्द हुवा, खुन नीकला वो सब उन्हों ने देखा था.
मैं : अब मारपीट करते हैं ?
मंजु : मारपीट कर लेते तो अच्छा होता. ये तो सहा नहीं जाता, कहा नहीं जाता. सुबह होते ही खेत में चले जाते हैं. दोपहर नौकर भेज खाना मंगवा लेते हैं. रात को आते हैं चुपचाप खा लेते हैं और झट पट वो कीया ना कीया कर के करवट बदल कर सो जाते हैं. ना बात ना चीत. मैं पूछुं तो ना जवाब. क्या करुं मैं ? कुछ बोले तब मैं सफाइ करुं ना ? अब तो वो करना भी बंद कर दीया है. कभी कभी रात को नहीं आते तब मुझे बहुत डर लगता है. उन्हे कुछ हो जाये तो मेरा क्या हाल होगा ?

इतना कहते हुअे वो फिर से रो पडी. नेहा ने उसे हमारे बीच चारपायी पर बीठाया. मैं ने उस के कंधों पर हाथ रख आगोश में लीया. मेरे सीने में चहेरा छूपा कर वो रोती रही. मैं उस की पीठ सहलाता रह्या. नेहा की आंखों में भी आंसु भर आये.

थोडी देर बाद वो शान्त हुइ. उस का चहेरा उठा कर मैं ने आंसु पोछे. इतनी मासुम लग रही थी की मैं ने उस के गाल पर कीस कर दी. मेरा देख कर नेहा ने दुसरे गाल पर कीस की. मैं कुछ सोचुं इस से पहले मेरे होठ मंजु के नाजुक होठों से लग गये.

लगता था की बडे भैया ने मंजु को कीस करना सीखाया नहीं था. जब तक मैं ने होठ चीपकाये रक्खे तब तक वो हीली नहीं, कीस करने दीया. जैसे मैं ने जीभ से उस के होठ चाटने शुरु कीया वो छटपटाने लगी. मैं ने लेकीन उसे छोडा नहीं. उस के मुंह में जीभ डाल कर मैं ने चारों ओर घुमायी और उस के होठ चूसे. नेहा देखती रही.

तीन मीनीट बाद चुंबन छूटा. हम दोनो के मुंह सुज गये थे, थूंक से गीले हो गये थे. उस का चहेरा लाल लाल हो गया था.
नेहा बोली : हाय हाय भैया, मुझे कुछ हो जाता है तुम दोनो को देख कर.
अब मंजु ने नेहा का चहेरा पकड लीया और उस के मुंह से मुंह चीपका दीया. इस वक्त नेहा की बारी थी छटपटाने की. मंजु ने भी वैसा ही कीया जो मैं ने कीया था उस के साथ. उन दोनों को कीस करत देख मेरा लौडा जगने लगा.

उन की कीस दौरान मेरा हाथ कंधे से उतर कर मंजु के स्तन पर जा ठहरा. मैं ने स्तन छुवा ही, दबाया नहीं. उस ने मेरी कलाइ पकड ली लेकीन हाथ हटाया नहीं. वो चुदवाने के लीये तैयार हो रही थी फिर भी तसल्ली के लीये मैं ने पूछा : भाभी, बीस दीन से भुखी हो. आज हो जाय भोजन ?
नेहा चुंबन छोड कर बोली : भैया, तु...तु...भाभी को चो..च..चो...हाय हाय. वो करनेवाला है ?
मैं : जरुर, तु चली जाना देख ना सको तो .
मंजु : ना ना. तुम यहां ही रहना.

अब नेहा ने वो कीया जो मैं ने कभी सोचा तक ना था. अचानक वो तूट पडी मुझ पर और मुंह चुसने लगी. पहले मुझे जरा हीचकीचाहट हुइ वो मेरी बहना जो थी. लेकीन चंद सेकंडो में बहना की जगह अेक जवान लडकी आ गयी. फिर मैं ने मुड कर नहीं देखा. मैं ने कस कर उसे चुम लीया. नेहा के होठ इतने कोमल और रसीले होंगे ये मैं ने सोचा न था. मंजु का स्तन छोड मेरे हाथ ने नेहा का पकड लीया. जब तक चुंबन चला तब तक नेहा ने स्तन सहलाने दीया. जैसे कीस छूटी उस ने मेरा हाथ हटा दीया और बोली : धत्त, बहन की चुची भैया नहीं छुते.

चारपायी छोटी थी. मंजु ने फटाफट जमीन पर गादी बीछा दी. उस ने अपनी ओढनी नीकाल दी. छोटी सी चोली में मंजु के स्तन समाते नहीं थे, मैं ने अेक अेक कर चोली के बटन खोल दीया, मंजु ने ब्रा पहनी नहीं थी,जरुरत

कहां थी ? चोली हटते उस के नंगे स्तन मेरी हथेलीयों में कैद हो गये. नेहा ने मेरी कलाइ पकड कर अेक हाथ हटाया और खुद ने स्तन थाम लीया. धीरे से धकेल कर हमने मंजु को चीत लेटा दीया.

आगे झुक कर नेहा फिर से मंजु को चुमने लगी. अेक हाथ से स्तन से खेलते हुअे मैं ने दुसरा हाथ सपाट पेट पर उतार दीया. मंजु का स्तन मेरे हाथ में ना समा सके इतना बडा था. सीने पर जरा नीचे लगा हुवा था. नीपल और अेरिओला छोटे थे, उस वक्त सारा स्तन कडा हो गया था. मैं ने चीपटी में ले कर नीपल मसली तब कडी हो गइ. आगे झुक कर मैं ने मुंह में ले कर चुसी.

उस वक्त मंजु का हाथ मेरी जांघ पर फीसलता हुवा लंड पर पहुंचा. पाजामा उपर से लंड पकड कर उस ने दबा दीया. चुंबन छोड वो बोली : उस्सस, देवर जी, अैसे खजाने को छुपाये रखना पाप है. मैं तुम्हें माफ नहीं करुंगी. उस ने पाजामा की डोरी ढुंढ नीकाली, खींच कर खोल डाली. अंदर हाथ डाल कर उस ने लंड पकडा सही लेकीन पत्थर जैसे कडे लंड को बाहर नीकाल ना सकी, मुझे पाजामा उतारना पडा. फट से नेहा ने लंड पकड लीया. प्यार से उस के हाथ से लंड छुडाते हुअे मैं ने कहा : धत्त, भैया का लंड बहन नहीं छुती.

नेहा शरम से लाल लाल हो गइ. झटपट उस ने अपनी कुर्ती कमर तक उतार दी, ब्रा नीकाल दी और नंगे स्तन मेरे सामने धर दीये. मैं क्या करता ? अच्छी चुचीयां मेरी कमजोरी है. भाभी के स्तन बडे थे और नेहा के छोटे. संपूर्ण गोल गोरे गोरे नेहा के स्तन सीने पर उपरी ओर लगे हुअे थे. स्तन की चोटी पर बादामी रंग की अेरिओला थी जीस के बीच छोटी सी नीपल थी. मैं ने उंगलीयों की नोंक से नेहा का स्तन छुआ. उस ने मेरे हाथ पर हाथ रख कर स्तन से दबोच दीया.

दरमियान मंजु मेरे लंड को मुठीया रही थी. उस ने अपनी घाघरी कमर तक उठा ली और बोली : चलो ना अब. कीतनी देर लगाते हो ?

मंजु ने जांघें चौडी कर उपर उठा ली. उत्तेजना से सुजी हुइ उस की गीली भोस देख मेरा लंड ओर तन गया. मैं जांघे बीच आ गया. लुंड पकड कर भोस पर चारों ओर रगडा. सब गीला और चीकना था क्युं की लुड ने और भोस ने भरमार लार बहायी थी. दिक्कत ये थी की मुझे पता नहीं था लंड कहां घुसता है, चूत का मुंह कहां होता है. मैं ने यूं ही धक्के लगाये लेकीन अंधे की

लकडी की तरह लंड इधर उधर टकराया फीसल पडा लेकीन उसे चूत का मुंह मीला नहीं. मुझे लगा की मैं बीना चोदे ही झड जाने वाला था.

आज तक मैं ये नहीं समझ पाया हुं की लडकीयों को बीना सीखाये सेक्स का पता कैसे चल जाता है. शरम की मारी मंजु दोनो हाथों से चहेरा ढक कर लेटी रही थी, लंड का चूत में प्रवेश की आशा लीये. नेहा ने कभी लंड देखा नहीं था, लंड लेने की बाजु रही. फिर भी वो मेरी मदद में आयी, उस ने पकड कर लंड सही ठीकाने पर धर दीया. मेरे अेक ही धक्के से पुरा लंड चूत में उतर गया. मंजु के मुंह से आह नीकल पडी. नेहा गौर से लंड को चूत में घुसता देख रही.

चूत की मखमली करारी दिवारें लंड से चीपक गइ. लंड ने तीन चार ठुमके लगाये. चूत ने सीकुड कर जवाब दीया. मेरी उत्तेजना भी काफी बढ गइ थी. अकेला मत्था चूत में रह जाय इतना लंड मैं ने बाहर खींचा और अेक झटके से घुसेड दीया, दो चार अैसे टल्ले मारे तब लंड ज्यादा तन गया. मत्थे से ले कर मूल तक सारे लंड से आनंद के फवारे छूट ने लगे. अपने आप मेरे धक्के की रफतार बढती चली. मैं धनाधन मंजु को चोदने लगा. कुल्हे उछाल उछाल कर वो साथ देती रही.

मैं ओर्गेझम से नजदीक पहुंच गया था लेकीन मंजु चुदवाये जा रही थी, झड ने का नाम नहीं लेती थी. नेहा फिर काम आ गइ. उस ने मंजु की भोस पर हाथ जमा दीया. अंगूठा और उंगली की चीपटी में उस ने क्लाटोरिस पकड कर खींची मसली और बेरहमी से रगड डाली, तुरंत मंजु के नितंब डोल पडे. अब वो कमर के झटके लगाने लगी, उस की चूत ने अैसे लंड चुसा की मेरा बंध छूट गया. वीर्य की फचाफच्च पीचकारीयां मार मैं झरा मेरे साथ भाभी भी झरी.

थोडी देर मैं मंजु के बदन पर पडा रहा. लंड नीकाल कर सफाइ करने गया. जोरों की पीसाब लगी थी. झरने पर भी लंड झुका नहीं था. इस लीये पीसाब करने में देर लगी. ठंडे पानी से लंड धोया ओर डुबोया तब पीसाब नीकली. मत्था इतना सेन्सीटीव हो गया था की मेरा स्पर्श भी सह नहीं पाता था. सफाइ हो जानेके बाद दिक्कत हुइ उसे जांघीये में पुरने में. आखिर जांघीया बीना मैं ने पाजामा पहन लीया

कमरे में आया तब जो मैं ने देखा उन से मैं दंग रह गया. दोनो लडकीयां

आपस में लीपटी पडी थी नेहा नीचे थी. उस ने अपनी टांगें इतनी उपर उठायी थी की घूटने कान से लग गये थे, मंजु उपर थी और मर्द की तरह धक्के मार कर भोस से भोस रगड रही थी. जोरदार फ्रेंच कीस चल रही थी,दोनो नंगी थी. वे अपनी चुदाइ में इतनी मग्न थी की मेरा आना जान ना पायी. मैं जा कर चुपचाप अैसी जगह पर बैठ गया जहां से उन के चौडी जांघें बीच से भोस देख सकुं. अनायास मेरा लंड मुठ्ठी में पकडा गया.

दोनो काफी उत्तेजीत हो गयी थी. थक भी गयी थी. नेहा जोर जोर से कुले उछाल रही थी और मंजु को जोर लगाने कह रही थी. मंजु के धक्के लेकीन धीरे पड ने लगे थे. मुझे लगा की मंजु से नेहा को ओर्गेझम नहीं हो पायेगा. मैं जा के उन दोनो के पीछे बैठ गया. मैं ने मेरी जांघे चोडी की तब लंड नेहा की चूत तक पहुंच सका. आगे झुक कर जब मैंने मंजु क`स्तन थाम लीये तब वे दोनो को आश्चर्य हुवा. मंजु बोली, " अच्छा हुआ तुम आ गये. अब संभालो अपनी बहन को."
वो उतर ने जा रही थी, मैं ने रोक लीया. कहा, " जाओ मत. हम तीनो साथ चुदाइ करेंगे. "

वैसे भी कंवारी लडकी को चोदने का खयाल से लंड जरा नर्म हो ने लगा था. पीछे से ही मैं ने मंजु की चूत में डाल दीया. वो कुछ कहे इस से पहले मैं ने चार पांच तेज धक्के मार लीये. लंड अब काफी कडा हो गया. मंजु की चूत से नेहा की दूर कहां थी ? मैं ने मंजु की चुत से लंड नीकाला और अेक जोरदार धकके से नेहा की चूत में घुसेड दीया. झील्ली फटते ही नेहा चीख उठी लेकीन मंजु ने अपने मुंह में झेल ली. पूरे लंड को चूत में दबाये रख मैं रुका.

तब नेहा को पता चला की मेरे लंड ने उस का योनि पटल तोड दीया है. वो बोली, " भैया तुम कब आ धमके ? बहुत दर्द होता है, उतर जाओ तुम दोनो. "
मंजुला बचिमें से नीकल कर उतर गइ. दो तीन तकीये उस ने नेहा के सिर नीचे रख दीय. उस ने कहा, " ननद जी, जो होना था सो हो गया है. अब देखीये तुमारे भैया का लंड कैसा तुमारी चूत में फीट बैठा है. दर्द की फीकर ना करो, अभी चला जायेगा. देवर जी, जरा रुकना."

लंड को चूत में दबाये रख मैंने कहा, " नेहा, सच बता, तेरी इच्छा थी ना ?"
फीर शरमा कर नेहा ने अपना चहेरा ढक दीया और सिर हीला कर हा कही.

उस के मुंह पर मुसकान आ गइ. वो देख कर लंड ने ठुमका लगाया और ज्यादा मोटा हो कर चूत को भी ज्यादा चौडी कर दी,
उइइइ कर के नेहा फीर चील्ला उठी. मैं ने उस का मुंह चुम कर कहा, " ये आखरी दर्द था. अब कभी नहीं दुखेगा. देख.
दो इंच सरीखा लंड नीकाल कर मैंने फीर पेला, और पुछा : हुवा दर्द ?
इस बर उस ने ना कही. मैं ने कहा : अब नीचे देख क्या होता है.
वो देखती रही और मैं ने होले होले लंड नीकाला. जब अकेला सुपाडा चूत में रह गया तब रुका.
झीलली का खून और लंड और भोस की लार से गीला लंड देख नेहा बोली : भैया, तेरा इतना बडा तो कभी न था. कब बढ गया ?
मैं : प्यारी, तेरी भोस भी इतनी खीली हुइ मैं ने कभी देखी नहीं थी.
मंजुला : मैं कहुं ? चुदाइ के वक्त लंड और भोस का स्वरुप बदल जाता है. वैसे तो तुमारे बडे भैया का लंड छे इंच जीतना है, लेकीन जब वो चोदते हैं तब सात इंच जैसा दीखता है.
मैं : होगा अैसा कुछ नेहा, अब मैं लंड डालता हुं. दर्द होवे तो बोलना.
आसानी से पूरा लंड नेहा की चूत में घुस पाया. जब क्लाइटोरिस दब गइ तब नेहा बोली : उस्ससस, बडी जोर से गुदगुदी होती है.
मैं ने कुले घुमा कर मोन्स से क्लाइटोरिस रगडी. नेहा के नितंब भी हील पडे.
वो बोली : सीसीइइइ, मुझे कुछ हो रहा है. अैसे करते रहो ना भैया.

अब मुझे तसल्ली हो गइ की नेहा की चूत तैयार है. मैं ने धीरे धकके से चोदना शुरु कीया. मंजु झुक कर नेहा का मुंह चूस ने लागी. होले होले मेरे टल्ले की रफतार और गहराइ बढने लगे. नेहा भी कुले उछाल उछाल कर चुदवाने लगी. जीस तरह चुत में फटाके हो ने लगे इस से पता चला की नेहा ओर्गेझम के करीब आ गइ थी. नेहा के पांव मेरि कमर से लीपटा कर धनाधन धनाधन धक्के से मैं ने नेहा को दस मिनिट तक चोदा. जब उसे ओर्गेझम हुवा तब वो ओओओ...इइइइ कर चील्ला उठी और बीन पानी की मछली की तरह छटपटा ने लगी. कइ जगह पर उस ने दांत गडा दीये, नाखुन से मेरी पीठ खरोंच डाली. कमर के झटे अैसे लगाये की अेक दो बार चूत से लंड नीकल पडा. लंड पर चूत अैस सीकुडी मानो मुठ्ठी में पकडा हो.

मेरा लंड तन कर लोहे जैसा बन गया था. चूत में आते जाते टोपी मत्थे पर चडती और उतरती थी जैसे मूठ मारते हैं वैसे. नेहा का ओर्गेझम शान्त हुवा भी न था की मैं झड गया. झटके से चोदते हुअे लंड ने वीर्य की पीचकारीयां छोड दी. अेक अेक पीचकारी के साथ लंड से बीजली का करंट नीकल कर सारे

बदन में फैल जाता रहा. हम दोनो शिथिल हो कर ढल पडे.

भाभी नाश्ता ले आयी. सब को भूख लगी थी. खाते खाते मंजु बोली : यश भैया, मेरी देवरानी बडी नसीबदार होगी.
मैं जानता था क्युं फीर भी मैं ने पूछा : क्युं ?
भाभी शरमायी लेकीन मुंह फीरा कर बोली : क्युं की रोज रात तुमारा लंड से चुदवा सकेगी, नेहा बहन को भी अच्छा वर मील जायेगा.
नेहा : भैया, तुम बडै भैया से बात क्युं नहीं करते ? तुम समझाओगे तो वो मान जायेंगे. वो तुमारी ही सुनेंगे, ओर कीसी की नहीं.
उस की बात सच थी. जसु गांव में मत्था फीरा माना जाता था. कीसी की भी जो सुनता था वो मेरी थी.
मैं : कल सुबह मैं आ जाउंगा और उम से बात करुंगा.

दुसरे दीन माताजी ने मुझे ओर नेहा को मौसाल भेज दीया. चार दीन वहां रह ना पडा. घर में शादी का माहौल था इस लीये नेहा को अकेले में मील ना पाया.

वापस आते ही में जसु से मीलने उस के खेत में गया. दस अेकर का नंबर था. रास्ते से दूर अेक कोने में बडा कुवा था जीस में जसु ने पंप लगवाया था. बाजु में अेक कोटरी थी. आम के दस बारह पेड से जगह सुहानी लगती थी,

मुझे देख कर वो चोंक पडा. बोला, "अरे दाक्तर सहाब, आप ने क्युं तकलीफ उठायी ? संदेश भेज कर मुझे बुला लीया होता."
मैं, " छौड यार, तु घर आता नहीं और मेरे घर में मैं बोर हो रहा था, मैं ने सोचा की खेतमैं अेक दीन गुजारुंगा तेरे साथ तो मझा आ जायेगा."
"अच्छा कीया. ओर सुनावो, कैसे हो ? नेहा कैसी हे ?"

उस दीन सारा वक्त मैं ने जसु के साथ गुजारा, होले होले उस ने सब बात बतायी. चतुरलाल नाम का अेक चुदक्कड ने मंजुला पर डोरे डाले थे. जब दाल ना गीरी तब उस ने जसु को भरमाया. मैं उस चतुरलाल को अच्छी तरह जानता था. शाम होने तक मैं ने जसु को मना लीया. घर जाते वक्त रास्ते मैं मैं ने कहा,"आज की रात भाभी को कस कर चोदना. तु नहीं चोदेगा तो और कोइ चोद लेगा, हो सकता है मैं ही चोद लुं."
जसु,"तेरी बात अलग है चाहे तब चोद लेना, तेरी भाभी जो लगती है. लेकीन दुसरे को मैं बरदाश्त नहीं कर सकुंगा."

मैं, "बस, तो आज हो जाने दे. कल सुबह आ मीलुंगा और रीपर्ट मागुंगा. मंजुर ?"
"मंजुर."

घर जा कर सोने से पहले मैं ने नेहा को सब बात बता दी. रात के दस बजे होंगे. नेहा बोली, "मुझे गुदगुदी हो रही है. वो लोग क्या करते होंगे ?"
मैं ने कहा, "जसु का लंड भाभी की चूत में घुसा होगा."
"हाय हाय, हम वहां होते तो देखना मीलता. चलो, चलेंगे ?"
"ना, उन दोनो को अेक राउन्ड खतम करने दे. बाद में जायेंगे,"
"तब तक अेक कीस करो ना..."

अेक कीस ? नेहा ने मेरा मुंह अपने होठों के बीच ले लीया. मेरे हाथों ने स्तन थाम लीये. मेरे होठों पर जीभ चला कर उस ने मेरे मुंह में डाली. मैं ने मेरी जीभ उस की जीभ से लडायी. इधर मेरा लौडा खडा हो गया, उधर उसकी नीपल. पाजामा के उपर से ही मैं ने भोस सहला दी. नेहा ने लंड पकड लीया.

प्रयत्न कर के हमें अलग होना पडा. वो बोली, "अब तो भाभी के घर जाना ही पडेगा."
माताजी से इजाजत ले कर हम जसु के घर आये. भाभी ने दरवाजा खोला. हमें देख वो आश्चर्य में पड गइ. बोली, "आइये, आइये, लगता है तुम दोनो को नींद नहीं आती."
नेहा, "अैसा ही कुछ, तुम और बडै भैया क्या करते होंगे ये सोचते रहे थे हम. बताओ क्या चल रहा है ?"
जसु भी आ गया. उन के कपडों से जाहिर था की चुदाइ हो चुकी थी लेकीन ताजा चुदाइ की जो रोनक होती है वो नहीं थी उनके चहेरे पर. कुछ गरबड जरुर थी.
मैं ने जसु से पुछा, "क्या हुवा जसु ? अैसे उदास क्युं दीखते हो ?"
जसु, "मंजु, तु नेहा को ले कर दुसरे कमरे में चली जा. यश से बात कर के मैं बुला लुंगा"
वे दोनो चली गइ. जसु बोला, "यार, गजब हो गया. अैसा कभी हुवा नहीं था, मुझे कहते भी शरम आती है."

बात ये हुइ थी की आधे घंटे की चुमाचाटी के बाद दोनो काफी उत्तेजीत हो गये थे. मंजुला ने सब कपडे उतार दीये, लेट गइ और टांगे पसारे उपर उठा ली. जसु उस की जांघें बीच आ गया. जैसे उस ने लंड चूत के मुंह पर टीकाया

वैसे ही फच्च फच्च फच्च वीर्य की पीचकारीयां छूट गइ. लंड नर्म हो गया. चोदे बीना जसु के लंड ने पानी छोड दीया.

हसते हुअे मैं ने कहा, "बस ? इतना ही ? डर गये ?"
जसु, "मेरी जान जा रही है और तु हस रहा है ? क्या करेंगे अब? बोल ना."
"पहले भाभी और नेहा को बुला ले. मैं इलाज दीखाता हुं."
"भाभी सही, नेहा की क्या जरुरत है ? उसे घर भेज दे. कंवारी है, उसे चुदाइ की बातें नहीं सुनानी चाहीये."
"ना, ना. वो काम आयेगी. बुला ले उन दोनो को."

आते ही नेहा बोली, "भाभी ने मुझे बता दीया है. यश, क्या करेंगे ?"

मैं ने कहा, "ये कोइ नयी चीज नहीं है. लंबे समय तक संयम रखने के बाद पहली चुदाइ करते वक्त अैसा होता रहता है. जसु, तु चोदने के लीये बेताब हो रहा है. है ना ? लेकीन अभी भाभी तेरे काम की नहीं है. वैसे भाभी चुदवाने के लीये मरी जा रही है लेकीन जसु का लंड उस के काम नहीं आयेगा आज."
जसु, "तो क्या कीया जाय ?"
मैं," नेहा, तु जायेगी बडे भैया के साथ ?"

शरमा के नेहा ने मुंह फेर लीया. भाभी से लीपट कर कान में कुछ कहने लगी
भाभी बोली, "अच्छा, अैसा करेंगे."
जसु की ताज्जुबी कोइ हद ना रही. मैं ने उसे पुछा, "जसु, क्या खयाल है ? चोदेगा नेहा को ?"
वो बोला, "मुझे लगता है की में सपना देख रहा हुं. नेहा, आ जा मेरे पास."
भाभी, "उन को डर लगता है."
में, "हां जसु, नेहा अभी नयी नयी है. संभल कर चोदना होगा"

उठ कर जसु भाभी और नेहा के पास गया. भाभी की बाहों में से नेहा को छुडाते हुवे कहने लगा, "चल नेहा, हम तेरी भाभी को दीखा देंगे की असली चुदाइ कीस को कहते है."

शरमाती हुइ नेहा को ले कर जसु पलंग पर बैठ गया. मुंह से मुंह लगा कर उस ने कीस चालु कर दी. उस ने अेक हाथ स्तन पर रख दीया. नेहा ने हाथ हटा दीया. जसू ने वही हाथ पकड कर लौडा पकडा दीया. नेहा थोडा

कसमसायी परंतु चुम्बन की मदहोशी में उसे पता ना चला की कब उस की उंगलींयों ने लौडा पकड लीया. जसु का लंड अभी अभी झरा था और लौडे को जगाना नेहा को आता नहीं था. इस लीये जसु के लौडा जगा नहीं.

में और भाभी सोफा पर बैठे देख रहे थे. जसु हिंमत हार जाय इस से पहले कुछ करना जरुरी था. मैं ने मंजु से कान में पुछा,"भाभी, तु ने लंड चुसा है कभी ?"
"ना, अैसा गंदा कौन करे ?"
"शुरु शुरु में गंदा लगता है लेकीन बाद में मजा आता है. तु अैसा कर, जसु नेहा के साथ खिलवाड कर रहा है तब जा कर लौडा मुंह में ले. देखना क्या होता है,"
मेरा कडा लंड मंजु के हाथ में था. उसे दबा कर वो बोली,"कुछ भी हो, इस को मेरे लीये ही रखना."

हम दोनो उठ कर पलंग पर गये जसु चीत लेट गया था. नेहा के हाथ से लौडा छुडा कर भाभी ने मुंह में ले लीया. नेहा जसु के पहलु में थी. मैं उस के पीछे लग गया, कमर फीरते हाथ डाल कर मैं ने नेहा की सलवार का नाडा खोल दीया. कुर्ती पीठ पर हूक वली थी, मैं ने वो भी खोल दीये.

जसु नेहा की कुर्ती उतार रहा था की मंजु का मुंह ने लौडे का मत्था अंदर ले लीया. थोडी देर वो हीली भी नहीं, बाद में बच्चे की तरह लौडा चुसने लगी. ये इलाज कामयाब रहा. देखते देखते में जसु का इंड तन गया, मंजु का मंह भर गया.

जसु दंग रह गया. नेहा को छोड कर वो बैठ गया. लंड मुंह में भरे हुअे मंजु ने जसु की ओर देखा. उन दोनो की नजरें मीली. मंजु ने तुरंत नजर झुका ली. प्यार से उस के गाल पर हाथ फीराते हुअे जसु बोला," प्यारी, तुम से मुझे ये उम्मीद नहीं थी. आज मैं तुझे नहीं छोडुंगा."

जसु भाभी के मुंह से लंड नीकाल ने गया. भाभी ने लेकीन छोडा नहीं, चुसती रही. जसु के कुले हीलने लगे. वो धक्के लगा कर भाभी को मुंह में चोदने लगा. वो बोला," उस्स उस्ससस. अैसा मजा कभी नहीं आया था, ओओ,,मंजु वहां जीभ न लगा, वरना मैं झड जाउंगा."

नेहा मुझ से कीपट कर बैठ गइ थी. उस ने मेरा लंड पकड लीया था. मैं

नीपल मसल रहा था हम दोनो भैया भाभी का खेल देख रहे थे.

लंड की मोटाइ से जब मंजु को सांस लेने में दिक्कत हुइ तब झट से उसने लंड नीकाल दीया. जसु उस पर तूट पडा. उस ने भाभी को पलंग पर पटका और उपर चड गया. भाभी ने पांव उठा कर जांघें फैला दी. अेक झटके से जसु ने लंड चूत में ठोंस दीया और जोर जोर से धक्के मार भाभी की चूत चोदने लगा. बाहें गले में और पांव कमर से लीपटा कर नितंब के झटके लगा कर मंजु लंड लेने लगी.

सोफा में बैठे हुअे हम सब देख सकते थे. भाभी की चूत में आता जाता मुसल जैसा जसु के लंड को देख कर नेहा गरम हो रही थी. घडी घडी मेरा लंड दबोच लेती थी. मेरा अेक हाथ उस के स्तन पर रेंगता था, दुसरा भोस के साथ खेल रहा था.

अचानक नेहा पलटी और अपनी जांघें चौडी कर मेरी जांघ पर बैठ गइ. अपने आप लंड चूत पर धर दीया, होले से नितंब हीलाया तब सरसरसर करता लंड चुन में घुस गया, पूरा घुस ने पर क्लाइटोरिस ल्रड के मूल से दब गइ. योनि फट फट करने लगी. उस के स्तन मेरे मुंह पास थे, मैं ने नीपल चुस ली.

उधर जसु बेरहमी से भाभी की चूत मार रहा था. अेकाअेक मंजु चीख पडी, उस का बदन अकड गया, नितंब झटके के साथ गोल गोल घुमने लगे. जसु रुका नहीं. मंजु को बाहों में भर कर घचाघच्च, घचाघच्च धक्के से चोदता चला.

उसे देख कर नेहा बोली, "भैया, मुझे डर लगता है. भाभी को कहीं लग जायेगा."
मैं, "फीकर न कर, भगवान ने चुत अैसी बनायी है की वो मार खा सके."

कुछ पंद्रह बीस मीनीट की तुफानी चुदाइ बाद जसु और मंजु दोनों अेक साथ झडे. इस वक्त जसु भी चील्ला उठा. दोनो ढल पडे.

नेहा ने मेरी कमर पर पांव की कैंची सी बना ली. उसे बाहों में भर कर में खडा हो गया. लंड चूत में फसा था. पलंग पर नेहा को लेटा कर मैं उपर आ गया. दस मीनीट तक मैं ने नेहा को चोदा. हम दोनो भी साथ झडे.

सब जा कर सफाइ कर आये. जसु मंजु को गोद में लीये बैठा, हजार चुम्बन

कर के बोला, "प्यारी, मेरी गलती हो गइ की मैं ने तुझ पर शक कीया. माफ करेगी मुझे ?"
भाभी ने उस के मुंह पर हाथ रख आगे बोलने ना दीया. मैं ने पुछा, "कैसे तसल्ली हुइ ?"
"जब उस ने लौडा मुंह में लीया तब. मैं ने सोचा कीतना प्यार करती होगी मुझ से जो मेरे आनंद के लीये लौडा मुंह में लेती है. और लंड मुंह में था और मेरी नजर से नजर मीली तब मैं ने उन आंखों में जो प्यार देखा बस क्या कहुं ?"
मंजु बोली, "देवर जी, इन सब के लीये हम आप के आभारी हैं. आप के उपकार का बदला कैसे चुकायें ?"
मैं, "भाभी, तुम से जो लेना था वो तो अेडवान्स में ले लीया है हम ने, क्युं नेहा ?"
जसु गुलाबी मुड में था. आगे आगे उस ने कहा था की देवर होने से मैं मंजु को चोद सकता हुं . मैं बोलुं इस से पहले नेहा बोली, "वो तो भैया ने लीया है, मुझे कीस ने क्या दीया है ?"
जसु " नेहा तु मांग ले. लेकीन पहले ये बता की भाभी ने देवर को अेडवान्स में क्या दीया है."
नेहा ने धमाका कर दीया, बोली, "अपनी चूत."
घडी भर जसु समझ ना सका. बाद में जोर से हस पडा और बोला,"वाह रे मेरे शेर, पहेले से ही शिकार कर के बैठा है. चलो, अच्छा हुवा. कैसी लगी अपनी भाभी की चूत ?"
मैं, "नेहा की है वैसी."
जसु, "मुझे पता नहीं है की नेहा की कैसी है."
शरारत भरी आंखें नचा कर नेहा बोली, "आप सोचते रहीये कभी पता ना चलेगा."
जसु ने झपट कर नेहा को पकड ली और पेट पर गुदगुदी की. बचाओ, बचाओ चील्लाती नेहा हसती हुइ छटपटाने लगी. जसु कहां छोडने वाला था ? नेहा को भी कहां छुटना था ? काफी छीना क्षपटी के बाद नेहा को पलंग पर डाल कर जसु उपर चड गया. उस ने मुंह से मुंह चीपकाया तो नेहा ने टांगे पसारी. मैं और भाभी देखते रहे और जसु का लंड नेहा की चूत में उतर गया.

चूत में लंड घुसते ही दोनो शान्त हो गये. नेहा के हाथ जसु की पीठ सहलाते हुअे कुले पर पहुंचे. दोनो कुले अपनी ओर खींच खींच कर लंड लेने लगी. नेहा की सीकुडी चूत नयी नयी चुदवाती थी और अपना लंड लंबा मोटा था इस लीये जसु संभल कर धीरे धीरे चोद रहा था.

मैंने मंजु से कहा, "जो मजा तु ने बडे भैया को चखाया वो मुझे कब...कब.." मैं आगे बोल ना सका. आगे झुक कर मंजु ने मेरा लंड मुंह नें ले लीया था.

आधा घंटा तक मस्त चुदाइ चली. रात काफी बह चुकी थी. मैं और नेहा वहां ही सो गये.

वेकेशन के बाकी रहे दीनों में हम चारों ने तरह तरह की चुदाइ का मजा लीया